1

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, मुझे नहिं चैन पडती है।
छवी वैराग्यमय तेरी, मेरी आँखों में फिरती है।।टेक।।

निराभूषण विगत दूषण, परम आसन मधुर भाषण।
नजर नैनों की आशा की, अनी पर से गुजरती है।।१।।

नहीं कर्मों का डर हमको, कि जब लग ध्यान चरणन में।
तेरे दर्शन से सुनते हैं, करम रेखा बदलती है।।२।।

मिले गर स्वर्ग की सम्पत्ति, अचम्भा कौन सा इसमें।
तुम्हें जो नयन भर देखे, गति दुरगति की टलती है।।३।।

हजारों मूर्तियाँ हमने, बहुत सी अन्य मत देखी।
शांत मूरत तुम्हारी सी, नहीं नजरों में चढती है।।४।।

जगत सिरताज हो जिनराज, सेवक को दरश दीजे।
तुम्हारा क्या बिगड़ता है, मेरी बिगड़ी सुधरती है।।५।।

हे प्रभो! आपके दर्शन के बिना मुझे इस संसार में सदा आकुलता ही भासित होती है। आपकी वैराग्यमय मुद्रा सदैव मेरी आँखो के सामने दिखाई पड़ती है।

हे प्रभो! आप समस्त आभूषण और दोषों से रहित हो, तथा आप समवसरण में सर्वोच्च आसन पर बिराजमान होकर भव्य जीवों को दिव्य देशना प्रदान करते हो। मेरी भावना है कि आप मुझे नजर भर देखें पर आप तो सदैव अपनी नासाग्र दृष्टि से बिराजमान ही हैं।

हे प्रभो! जब तक आपके चरणों में मेरा ध्यान रहता है तब तक मुझे कोई कर्मादि का भय नहीं रहता है क्योंकि ऐसा सुना जाता है कि आपके दर्शन करने से सभी जीवों का भाग्य बदल जाता है।

हे प्रभो! आपके दर्शन करने के पुण्य के फल में यदि स्वर्ग की सम्पत्ति भी मिले तो इसमें क्या आश्चर्य है क्योंकि जो आपकी सौम्य वीतरागी मुद्रा एक बार देखता है उसकी दुर्गति का नाश हो जाता है।

हे प्रभो! हमने अन्य मत की हजारों प्रतिमायें देखी हैं परंतु आपकी शांत और सौम्य मुद्रा के अतिरिक्त अन्य कोई भी मूरत हमें अच्छी नहीं लगती।

हे प्रभो! आप तीन लोकों के सम्राट हैं। मेरी भावना है कि आप मुझे दर्शन दें क्योंकि इसमें आपको तो कोई हानि नहीं है और इससे मेरी दुर्गति का नाश होता है ।